University in News on 27 September 2021

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

कोविड में बढ़ी बायो व फार्मेसी की मांग

लविवि समेत कॉलेजों में प्रवेश में कड़ा मुकाबला

अक्षय कुमार

लखनऊ। कोविड काल में चिकित्सा सेवाओं की मांग बढ़ी है तो दूसरी तरफ इससे जुड़े पाठ्यक्रमों की तरफ विद्यार्थियों का रुझान भी बढ़ गया है। राजधानी के विवि व कॉलेजों में इस साल बीएससी बायो व फार्मेसी जैसे कोर्सों की काफी डिमांड है। कॉलेजों में जहां बीएससी बायो की सीटें पहली व दूसरी मेरिट में ही भर रही हैं, वहीं फार्मेसी के डिग्री और डिप्लोमा कोर्सों में प्रवेश को लेकर कड़ी टक्कर हो रही है।

अमर उजाला मिशन एडमिशन

लविवि में बीएससी बायो की 250 सीटें हैं, जबकि इसके लिए 4200 आवेदन आए हैं। यानी एक सीट पर 16 विद्यार्थियों के बीच मुकाबला होगा। इसके लिए प्रवेश काउंसिलिंग रविवार से शुरू हो रही है। इसी से बीएससी बायो में प्रवेश की मारामारी का अंदाजा लगाया जा सकता है। नवयुग कन्या महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सृष्टि श्रीवास्तव भी बताती हैं कि उनके यहां बीएससी बायो की 100 सीटों पर प्रवेश दूसरी मेरिट में ही पूरे हो गए। वह बताती हैं कि हाल के दिनों में इसकी तरफ छात्राओं का रुझान काफी बढ़ा है।

वहीं, केकेसी के प्रवक्ता डॉ. विजयराज श्रीवास्तव बताते हैं कि कॉलेज में बीएससी बायो की 420 सीटें हैं, जिसमें से शुरुआती मेरिट से ही 385 सीटों पर प्रवेश हो चुके हैं। बची हुई सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया जारी है। उन्होंने कहा कि पिछले साल की अपेक्षा इस बार बीएससी बायो की सीटें कम मेरिट पर ही फुल हो रही हैं। इसे लेकर विद्यार्थियों में काफी रुझान है। केकेवी में बीएससी बायो की 350 सीटों में 50 फीसदी सीटों पर प्रवेश पूरे हो गए हैं। प्राचार्य डॉ. राकेश चंद्रा ने कहा कि कोविड काल में विद्यार्थियों का इस तरफ रुझान बना है। कहीं न कहीं इसका बड़ा कारण इस क्षेत्र में विकल्प के ज्यादा अवसर उपलब्ध होना है।

फार्मेसी की एक सीट पर 6 दावेदार

प्रदेश में जहां पिछले दो वर्षों में तेजी से फार्मेसी कॉलेज खुले हैं और सीटें भी बढ़ी हैं। वहीं इस साल से फार्मेसी की मांग को देखते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय ने अपने यहां डीफार्मा व बीफार्मा की पढ़ाई की शुरुआत की है। डीफार्मा में प्रवेश के लिए यहां 60 सीटों पर 361 विद्यार्थी किस्मत आजमा रहे हैं। यानी एक सीट पर छह अभ्यर्थियों के बीच मुकाबला है। वहीं, एकेटीयू ने भी अपना फार्मेसी इंस्टीट्यूट खोलने की कवायद शुरू कर दी है ताकि इस विधा के विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा दी जा सके।

> कोविड एक वायरल इंफेक्शन है। इसके सामने आने के बाद बायोलॉजिकल रिसर्च काफी बढ़ा है। इसमें बायो बैकग्राउंड वालों की काफी जरूरत है ताकि बेसिक शोध किया जा सके। दवाओं पर शोध करने वाली लैब व इंस्टीट्यूट भी बढ़े हैं। इसके लैब में काम करने वाले विशेषज्ञों की मांग बढ़ी है। वहीं, फार्मेसी के विद्यार्थियों के लिए फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में काफी संभावनाएं बढ़ी हैं। यही वजह है कि इन दोनों कोर्सों की तरफ विद्यार्थियों का रुझान बढ़ा है। – **प्रो. पुष्पेंद्र त्रिपाठी,** निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज, लविवि

HINDUSTAN PAGE 4 & 8

सौम्य, सरल व्यक्तित्व के धनी थे प्रो. शर्मा

पुरखों को नमन 7

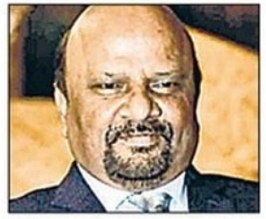

1957-2021

नाम: प्रो. एके शर्मा
परिचय: लखनऊ विश्वविद्यालय के जूलॉजी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष और पूर्व परीक्षा नियंत्रक थे

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के जूलॉजी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष और पूर्व परीक्षा नियंत्रक प्रो. एके शर्मा ने इसी साल अप्रैल में कोरोना के चलते संसार को अलविदा कह दिया।

प्रो. शर्मा जैसे हंसमुख और मिलनसार इंसान का यूं एकाएक सबके बीच से चला जाना बेहद झकझोर देने वाला वाकया था। अपने काम को लेकर बेहद संजीदा प्रो. शर्मा, निजी जीवन में नितांत सौम्य, सरल व्यक्तित्व के धनी थे। काम को लेकर उनका समर्पण कुछ यूं था कि दिन-रात जुटकर उसे पूरा करते थे। कई बार तो विश्वविद्यालय का काम घर लेकर चले जाते थे और वहां उसे पूरा करते थे लेकिन समय का हमेशा ध्यान रखते थे। मिलनसार और मृदुभाषी इतने थे कि हर कोई मुरीद हो जाता था। एकेडमिक पक्ष की बात करें तो पैरासिटिक प्रोटोजअन पर उन्होंने लगभग दस पीएचडी करवाईं। कई अवॉर्ड भी उन्हें मिले। कॉलेज डेवलपमेंट काउंसिल और मास कम्यूनिकेशन इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी के निदेशक रहे।

विश्वविद्यालय में छात्रों को और घर में अपने बच्चों को हमेशा अनुशासित रखना सिखाया। प्रो. शर्मा की बेटी डॉ. दीक्षा शर्मा बताती हैं कि उनमें सबसे बड़ा गुण धैर्य जो उन्होंने अपने बच्चों को भी सिखाया। उनसे उन्होंने बहुत ही सीखा है।